

!!<>!! अलबेला रो खेल फकीरी !!<>!!

( एक भगत के विशेष अनुरोध पर पूरा भजन )

कायर सके न झेल फकीरी, अलबेला रो खेल फकीरी ॥ फकीरी अलबेला ॥

ज्यू रण माय लडे नर सूरा, अईया झुक रहया सैल ।

गोली नाल जुजरबा चाले, सन्मुख लेवे झेल ॥ फकीरी अलबेला ॥

सती पती संग निसरी रे , अपने पिया के गेल ।

सूरत लगी अपने साहिब से , अग्नि काय बिच मेल ॥ फकीरी अलबेला ॥

अलल पंछी ज्यू उलटा चाले, बांस भरत नट खेल ।

मेरु इक्कीस छेद गढ़ बंका, चढ़गी अगम के महल ॥ फकीरी अलबेला ॥

दोय रे एक रहे नहीं दूजा, आप आपको खेल ।

कहे सामर्थ्य कोई असल पिछाने, लेवे गरीबी झेल ॥ फकीरी अलबेला ॥

जय श्री नाथजी की...